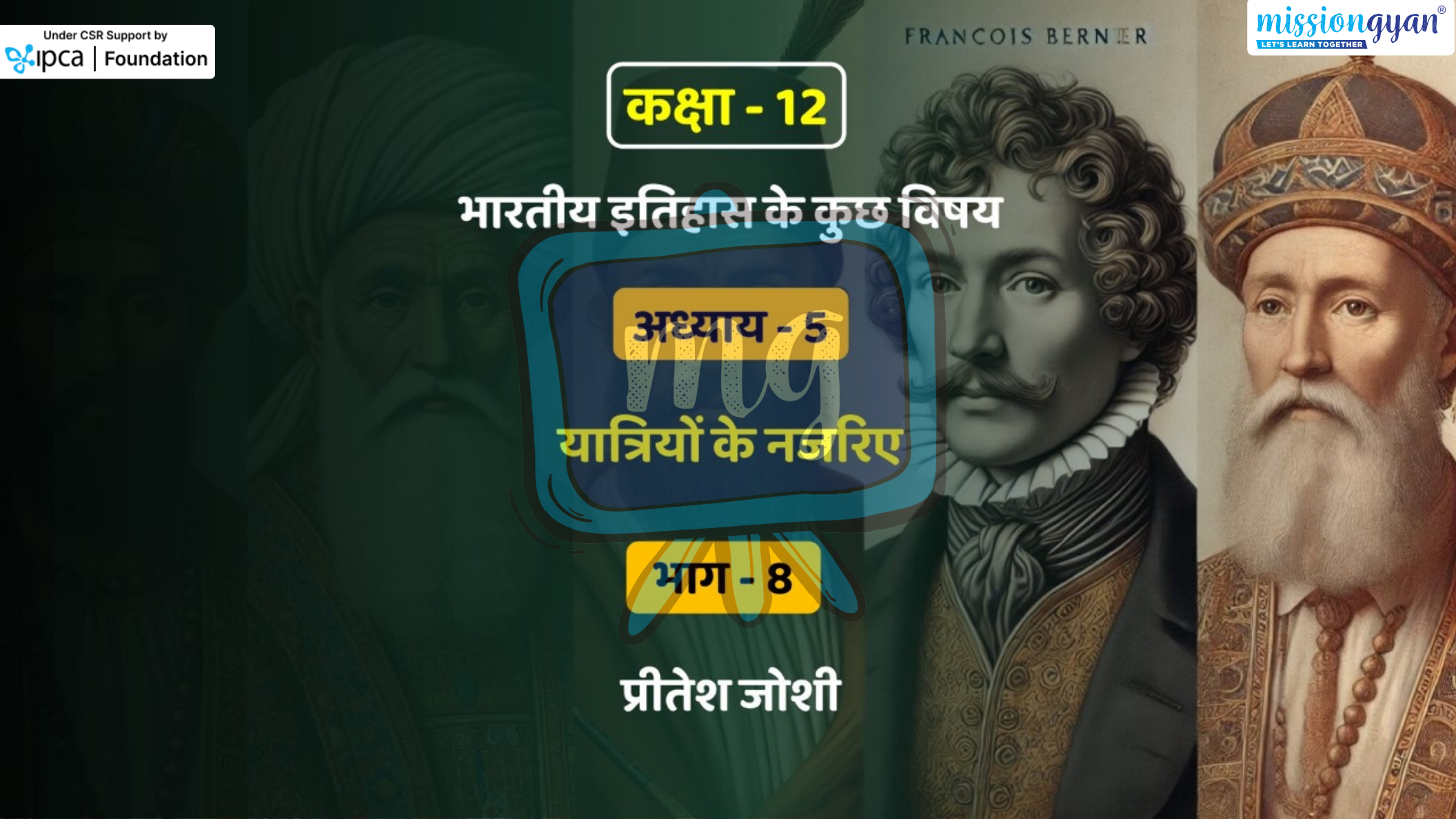
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 2. इब्न बतूता और बर्नियर ने जिस दृष्टिकोण से भारत में अपनी यात्राओं के वृतान्त लिखे थे, उनकी तुलना कीजिए तथा अंतर बताइए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्नबतूत।

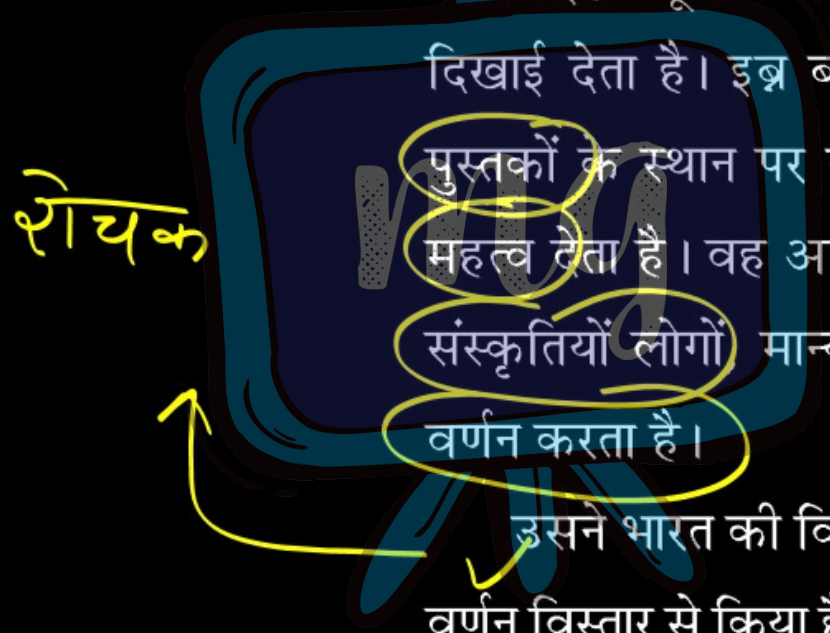
1) 14वीं
2) दिल्ली सल्तनत तुगलक
3) रोचक (अलग)
4) शहर → विशाल
5) भूमि + 2

बर्नियर

1) 17वी
2) मुगल वंश। → शाहजहां
3) नकारात्मक (-ve)
4) शिविर नगर
5) भूमि ×, अधिक, राजस्व

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

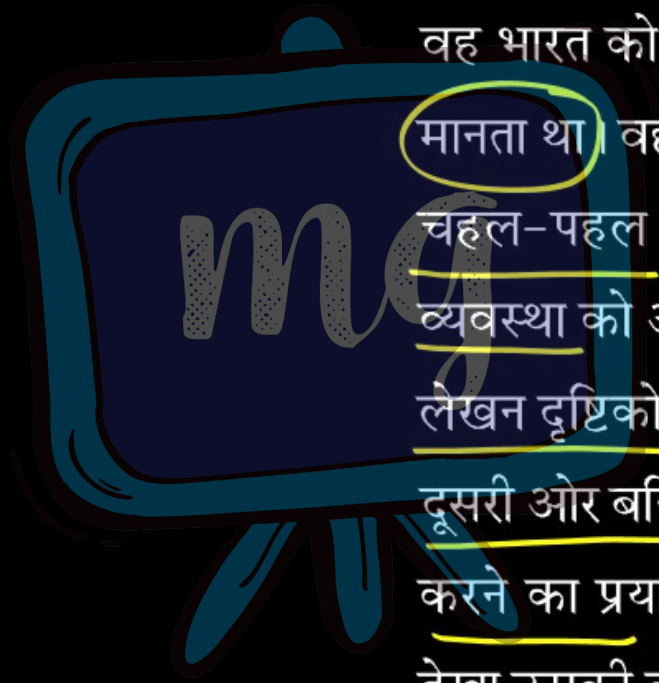


उत्तर : इब्न बतूता व बर्नियर के यात्रा वृतान्तों में अंतर स्पष्ट दिखाई देता है। इब्न बतूता अन्य यात्रियों की तुलना में पुस्तकों के स्थान पर यात्राओं से प्राप्त ज्ञान को अधिक महत्व देता है। वह अपनी पुस्तक "रिहला" में नवीन संस्कृतियों लोगों, मान्यताओं तथा आस्थाओं आदि का वर्णन करता है।

उसने भारत की विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन विस्तार से किया है। नारियल व पान जैसे वनस्पतिक उपज का वर्णन किया है जिससे उसके प्रदेशवासी अनजान थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

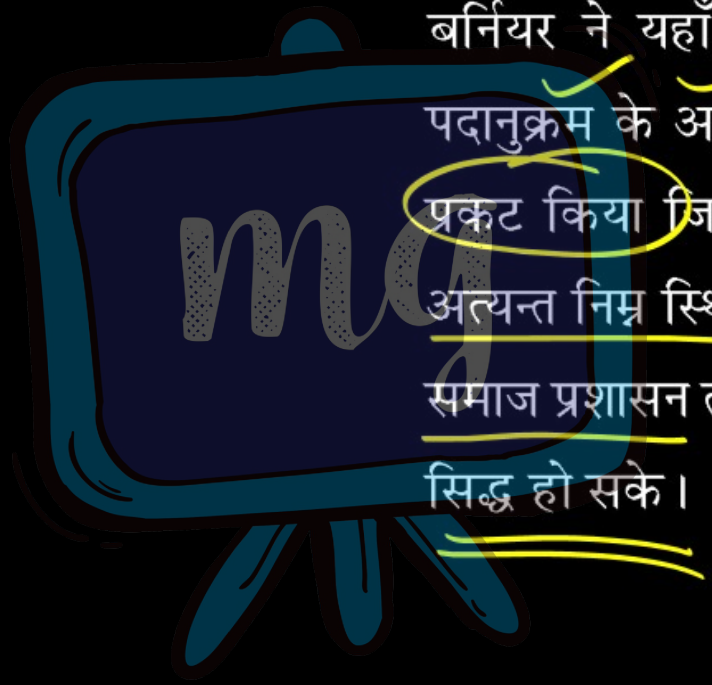


वह भारत को समृद्ध व घनी आबादी वाला शहर मानता था। वह यहाँ शहरी संस्कृति व बाजारों की चहल-पहल से प्रभावित था। यहाँ की डाक व्यवस्था को अत्यधिक कुशल मानता था। इनका लेखन दृष्टिकोण आलोचनात्मक था।

दूसरी ओर बर्नियर ने भारत की कमियों को उजागर करने का प्रयास किया साथ ही भारत में जो भी देखा उसकी तुलना यूरोप विशेषत: फ्रांस में व्याप्त स्थितियों से करता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

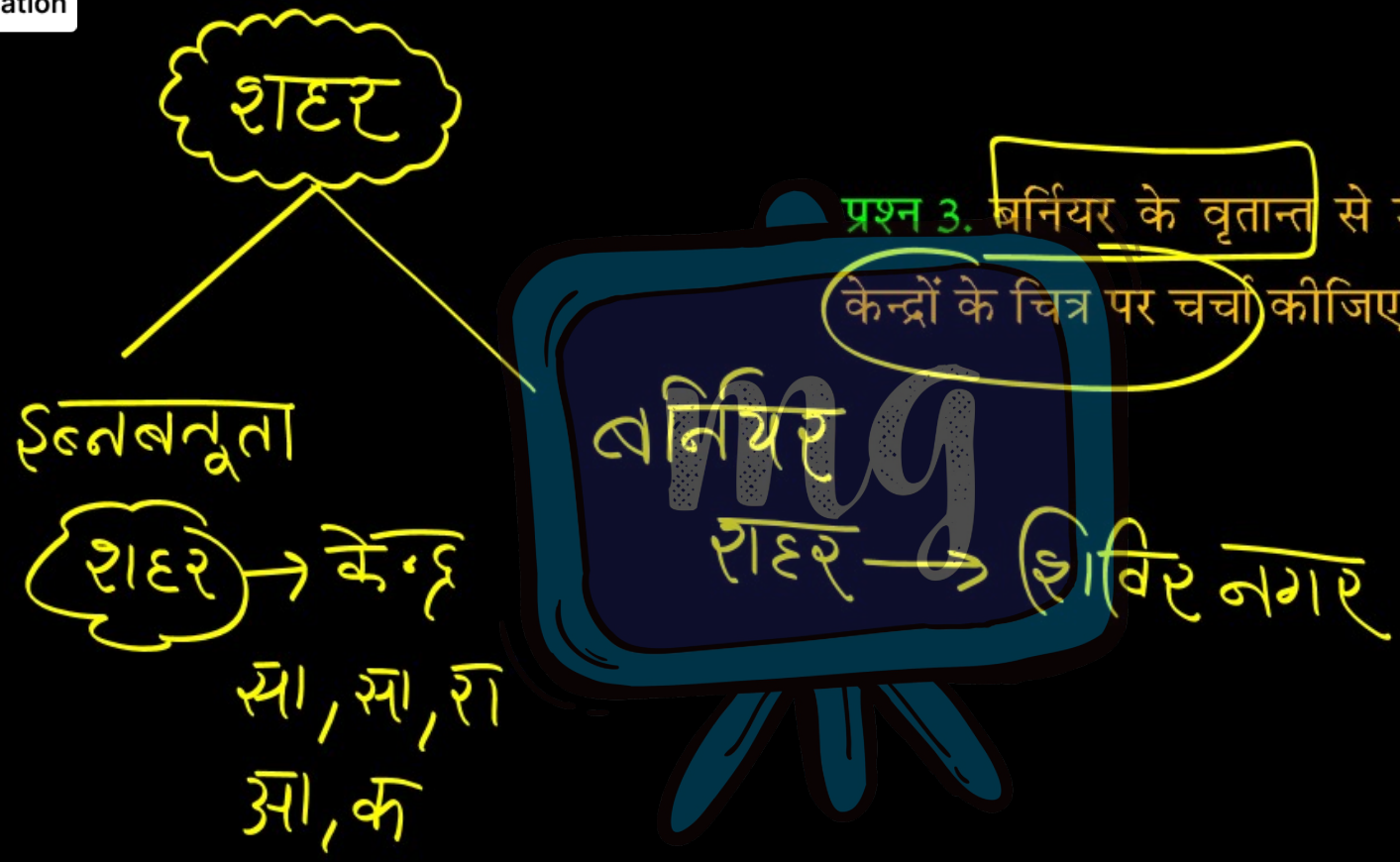
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



बर्नियर ने यहाँ जो भी भिन्नताएं देखी उन्हें पदानुक्रम के अनुसार क्रमबद्ध कर इस प्रकार प्रकट किया जिससे भारत पश्चिमी दुनिया को अत्यन्त निम्न स्थिति का प्रकट हो तथा यूरोपीय समाज प्रशासन तथा यूरोपीय संस्कृति की श्रेष्ठता सिद्ध हो सके।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 3. बर्नियर के वृतान्त से उभरने वाले शहरी केन्द्रों के चित्र पर चर्चा कीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : (1) फ्रांसीसी यात्री बर्नियर एक भिन्न प्रकार का बुद्धिजीवी था। उसने मुगल नगरों को "शिविर नगर" कहा है। जो अपने अस्तित्व हेतु राजकीय आश्रय पर निर्भर थे। ये नगर राजदरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते तथा कहीं ओर जाने पर पतन की ओर अग्रसर हो जाते थे।

(2) उसके अनुसार सभी प्रकार के नगर अस्तित्व में थे जैसे उत्पादन केन्द्र, व्यापारिक नगर, बन्दरगाह नगर, तीर्थ स्थान, धार्मिक नगर आदि।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(3) नगरों में व्यापारियों का संगठन होता था। पश्चिमी भारत में इस प्रकार के समूहों को ''महाजन'' कहा जाता था तथा मुखिया को ''सेठ'' अहमदाबाद जैसे शहरों में सभी महाजनों का सामुहिक प्रतिनिधित्व व्यापारिक समुदाय के नेता द्वारा होता था जिसे ''नगर सेठ'' कहा जाता था।

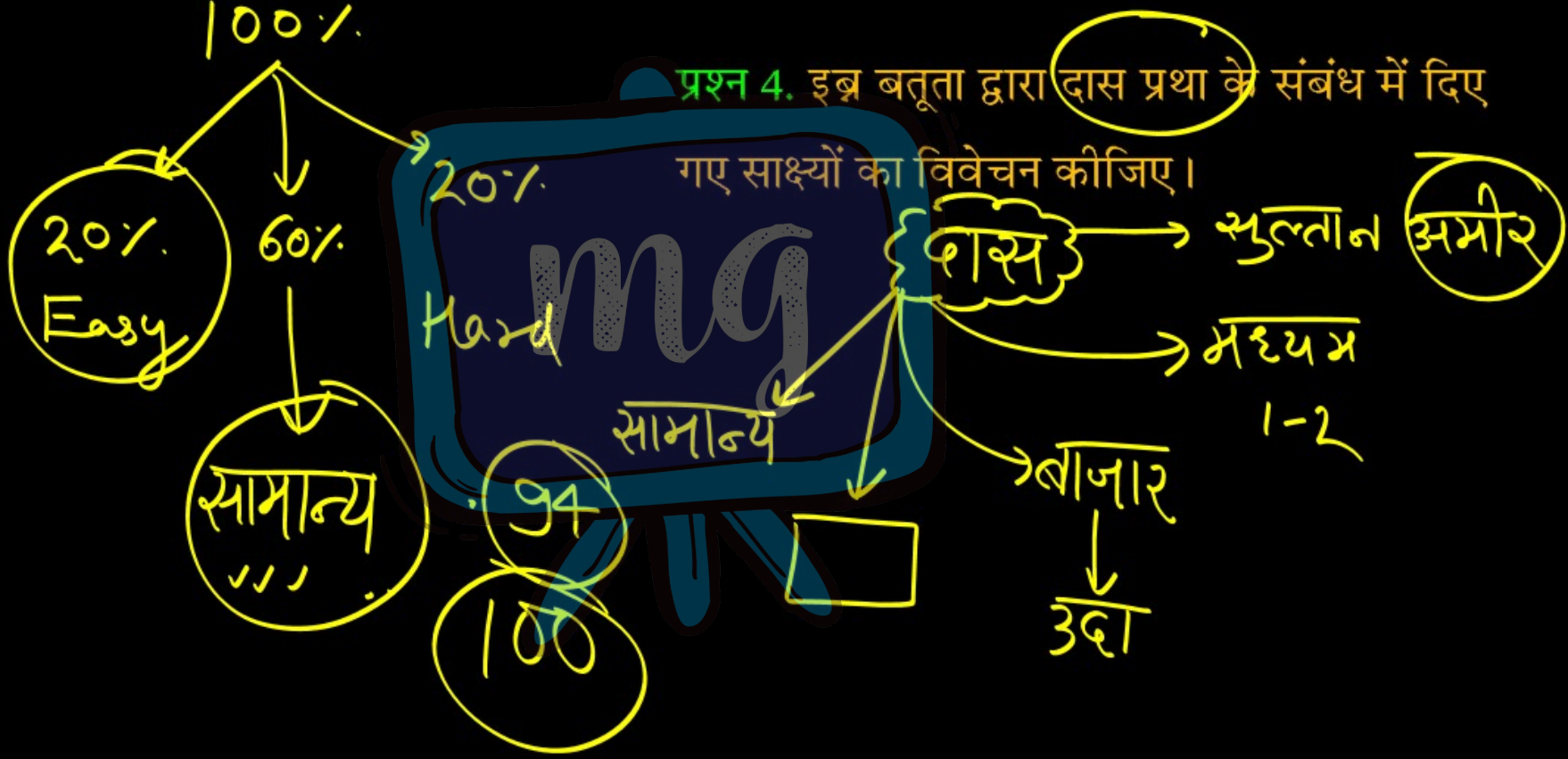
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(4) शहरों में अन्य व्यवसायिक समूह भी होते थे जैसे – हकीम अथवा वैद्य, पंडित या मुल्ला, अधिवक्ता, चित्रकार, संगीतकार, सुलेखक, वास्तुविद आदि। कुछ वर्गों को राज्य आश्रय देता था तथा कुछ सामान्य लोगों की सेवा कर जीवनयापन करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



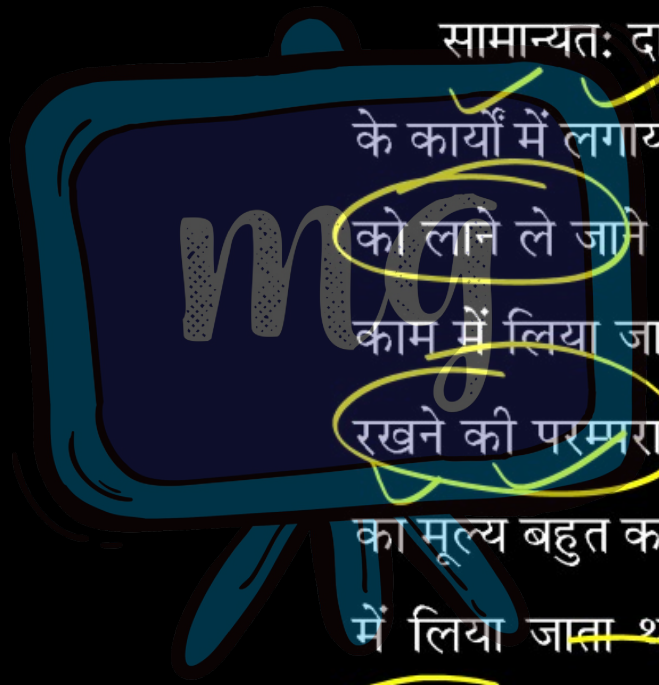
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न बतूता ने दिल्ली सल्तनत काल में दासों का विस्तृत वर्णन किया है। उसके अनुसार फिरोज शाह तुगलक ने दासों के लिए एक अलग विभाग खोला हुआ था। दिल्ली में दासों की बहुत बड़ी संख्या मौजूद थी तथा दासों में अत्यधिक भिन्नता भी थी। इब्न बतूता सुल्तान की बहिन की शादी में दासों के प्रदर्शन से विशेष प्रभावित हुआ था। उसने स्वयं ने सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक को भेंट देने हेतु घोड़े, ऊंट व दास खरीदे थे साथ ही सुल्तान के गवर्नर को भी भेंट में दास दिया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

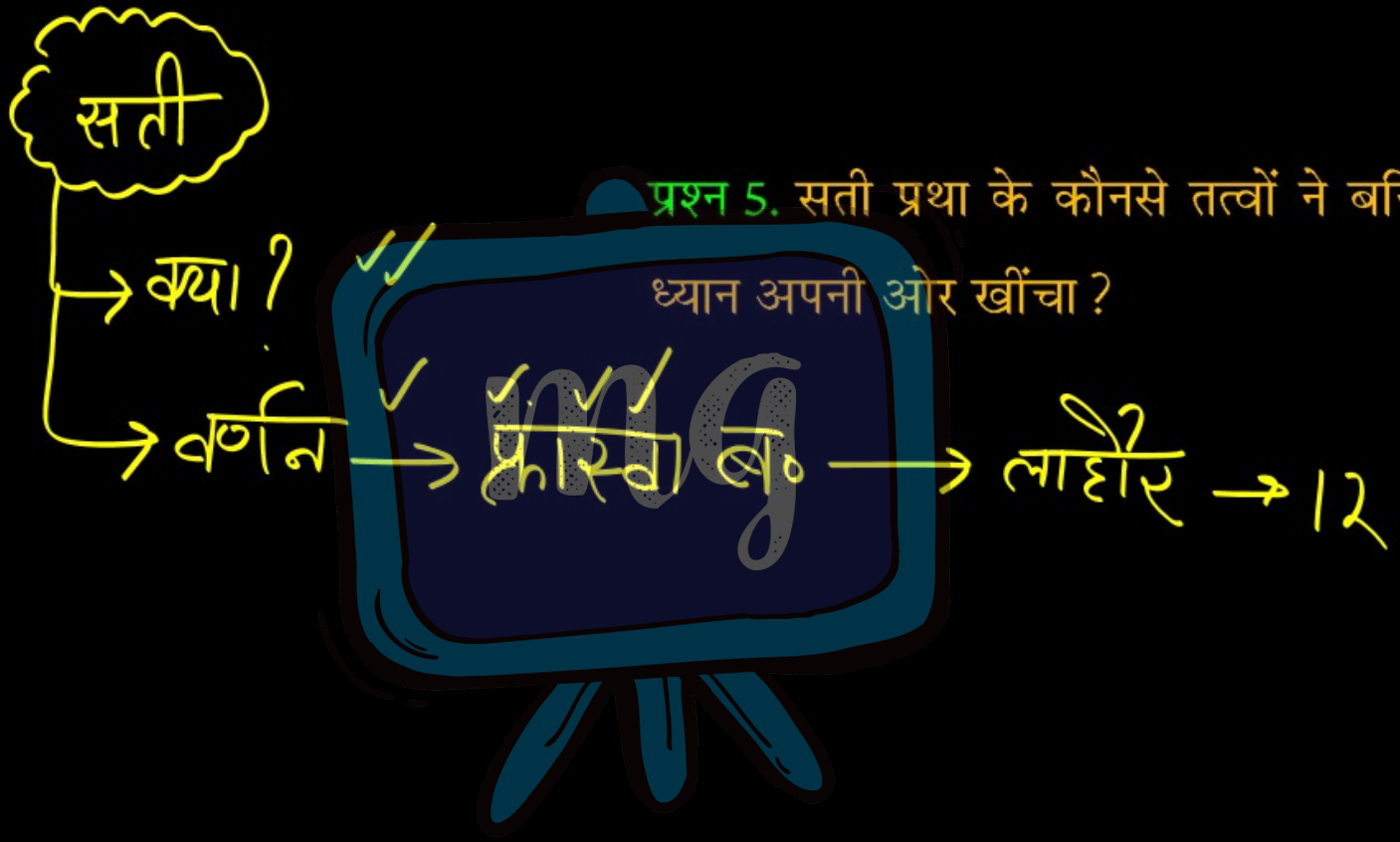
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सामान्यत: दासों को घरेलू कार्यों व मेहनत मजदूरी के कार्यों में लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त अमीरों को लाने ले जाने वाली डोली व पालकी में भी उन्हें काम में लिया जाता था। अधिकांश परिवारों में दास रखने की परम्परा थी। दासों विशेषरूप से उन दासों का मूल्य बहुत कम होता था जिन्हें घरेलू श्रम में काम में लिया जाता था। विशेष योग्यता वाले दासों का विशेष महत्व व मूल्य हुआ करता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

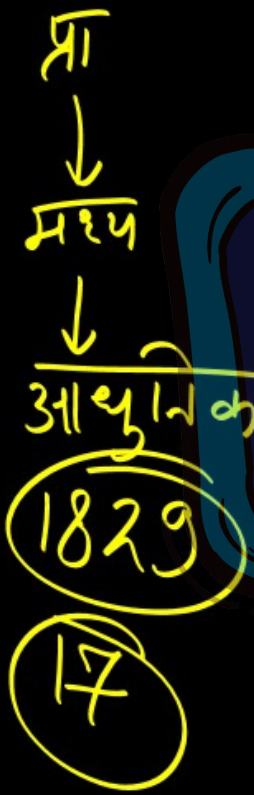
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 5. सती प्रथा के कौनसे तत्वों ने बर्नियर का ध्यान अपनी ओर खींचा ?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

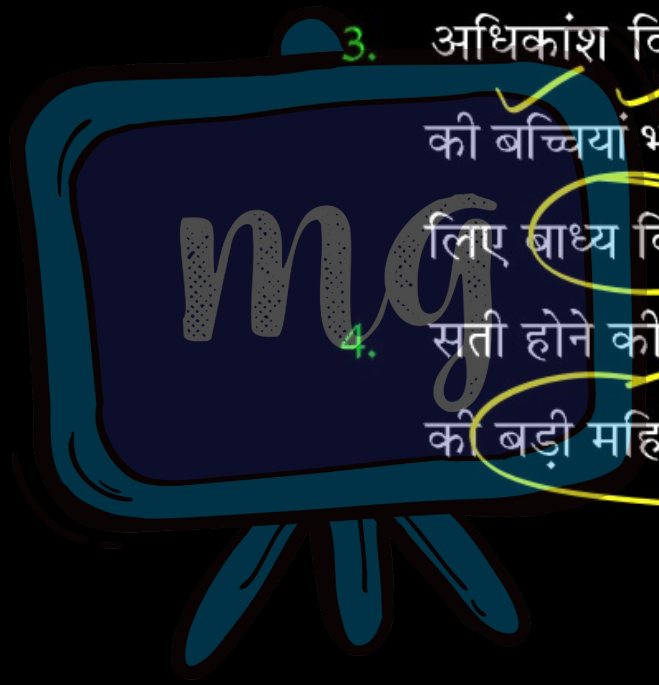


उत्तर : बर्नियर ने सती प्रथा के संबंध में विस्तृत वर्णन लिखा है। उसने लाहौर में स्वयं एक अल्पव्यस्क कन्या को सती होते हुए देखा था।

1. सती प्रथा भारत में व्यापक रूप से अस्तित्व में थी।
2. यह एक अमानवीय प्रथा थी जिसमें पति के निधन हो जाने पर उसकी विधवा स्त्री को अग्नि के भेंट चढ़ा दिया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

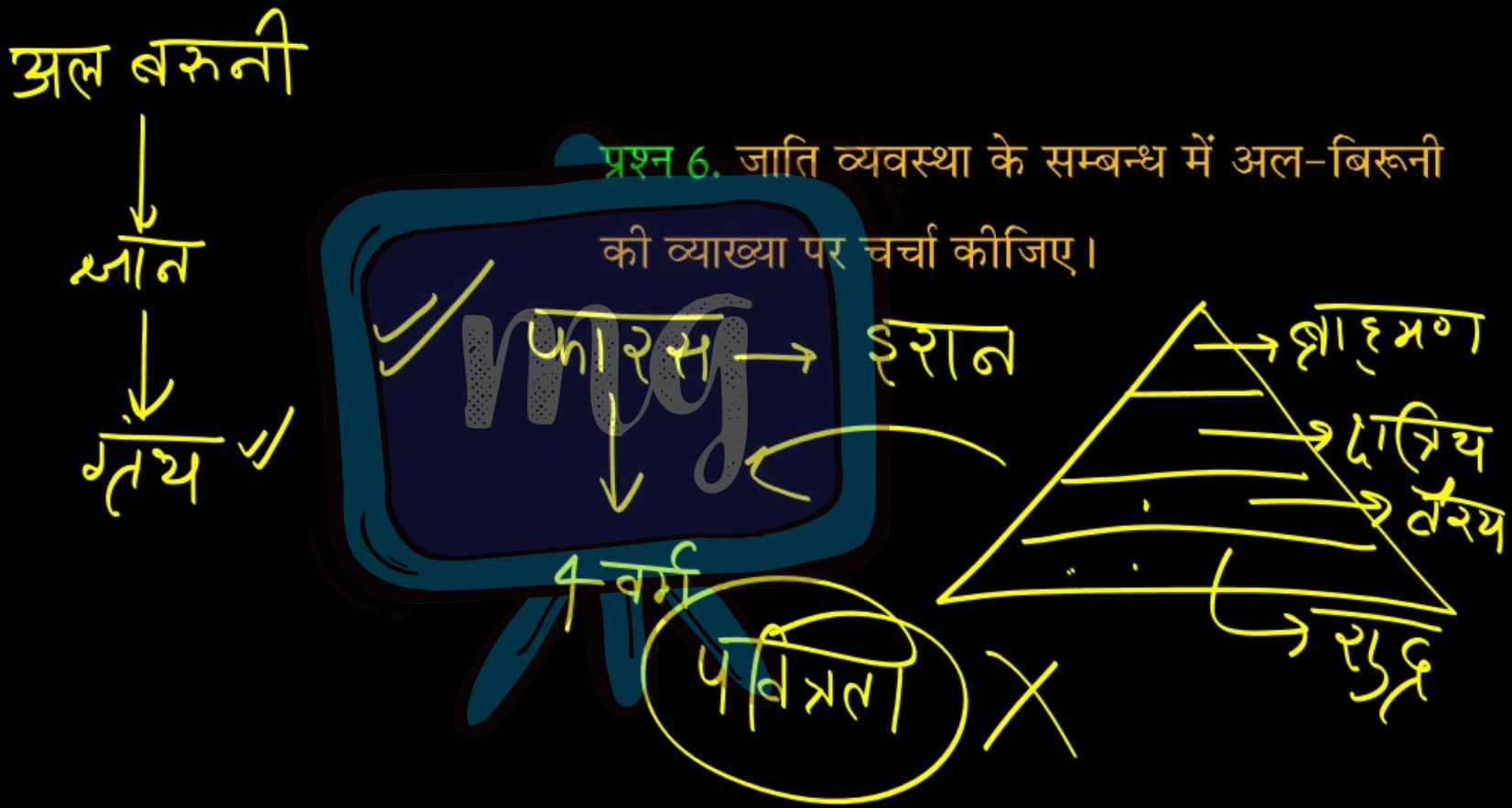
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



3. अधिकांश विधवाओं जिनमें बहुत कम आयु की बच्चियां भी होती थीं, उनहें जीवित जलने के लिए बाध्य किया जाता था।
4. सती होने की प्रक्रिया में ब्राह्मण व घर परिवार की बड़ी महिलाऐं भी शामिल होती थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

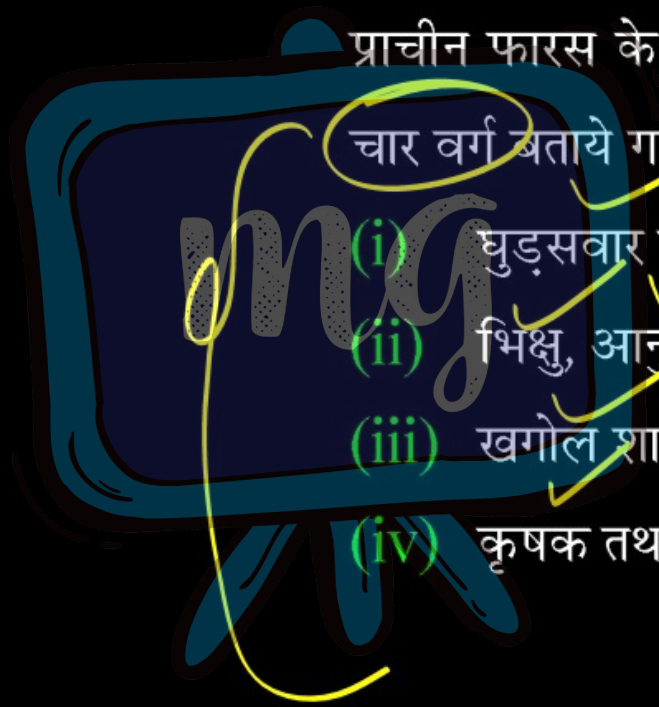
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक ''किताब-उल-हिन्द'' में भारतीय समाज मे प्रचलित जाति-व्यवस्था का विशुद्ध वर्णन किया है। उनकी व्याख्या निम्नानुसार है -

1. सामाजिक वर्गों का विवरण :- अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक में भारतीय जाति-व्यवस्था के सम्बन्ध में उसे अन्य समाजों तथा समुदायों के प्रतिरूपों के माध्यम से समझने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्राचीन फारस के समाज से तुलना करते हुए वहां चार वर्ग बताये गये थे–

(i) घुड़सवार तथा शासक वर्ग

(ii) भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक

(iii) खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक

(iv) कृषक तथा शिल्पकार

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. "अपवित्रता" पर विचार :- अल-बिरूनी जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को मानता था, परन्तु वह अपवित्रता की धारणा को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार "प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।" उदाहरण के लिए सूर्य वायु को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गन्दा होने से बचाता है। अल-बिरूनी इस बात पर जोर देता है कि यदि ऐसा नहीं हो, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाता।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

@17

उसके अनुसार जाति व्यवस्था में अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरूद्ध थी।

3. भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था :- अल-बिरूनी ने भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का उल्लेख निम्नानुसार किया है।

(i) ब्राह्मण या पुरोहित :- उसके अनुसार ब्राह्मणों को वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से मानी गयी है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(ii) क्षत्रिय :- क्षत्रियों की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के कन्धे व भुजाओं से मानी गयी है। सामाजिक दृष्टि से इन्हें द्वितीय स्थान दिया गया है।

(iii) वैश्य :- क्षत्रियों के बाद वैश्यों का स्थान आता है। इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा की जंघाओं से हुई मानी जाती है तथा वर्ण व्यवस्था में इन्हें तृतीय स्थान दिया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

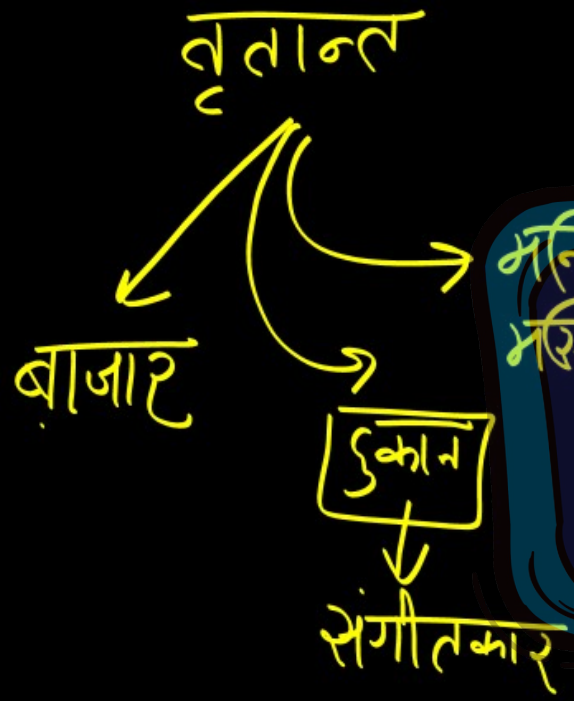
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(iv) शुद्र :- शुद्रों का जन्म आदि देव ब्रह्मा के चरणों से माना जाता है। चरणों का शरीर में अंतिम स्थान होने के कारण समाज में अंतिम अर्थात् चतुर्थ स्थान दिया गया तथा तीनों वर्णों की सेवा करना इनका कर्त्तव्य माना गया।

इन सभी वर्गों में भिन्नता होने के बाद भी ये शहरों व गाँवों में मिल-जुल कर रहा करते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 7. क्या आपको लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तांत सहायक है ? अपने उत्तर के कारण दीजिए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : इब्न-बतूता ने अपने यात्रा वृत्तान्त ''रिहला'' में समकालीन शहरी केन्द्रों की जीवन शैली का विस्तृत वर्णन किया है। हाँ, हमें लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही-सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तान्त काफी सहायक है। ऐसा लगता है कि जैसे सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया गया हो। उसकी जानकारी का मुख्य आधार उसके द्वारा किया गया सूक्ष्म अध्ययन एवं अवलोकन था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता के वृत्तान्त से समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली के बारे में निम्न जानकारियां प्राप्त होती हैं :-

1. व्यापक अवसरों से परिपूर्ण घनी आबादी वाले शहर:- इब्न बतूता के अनुसार तत्कालीन नगर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे। भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों में इच्छा शक्ति, साधनों व कौशल वालों के लिए कार्य के भरपूर अवसर थे। कभी-कभी युद्धों तथा अभियानों के कारण नगरों को नुकसान भी होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

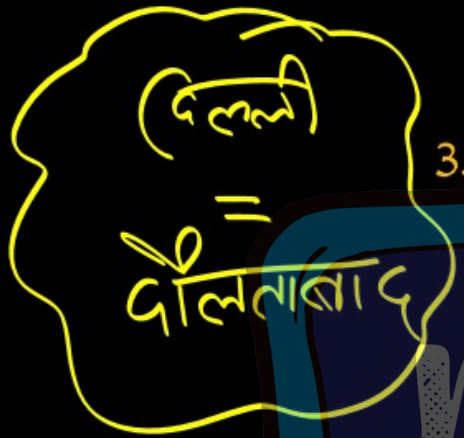
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



2. चमक-दमक वाले बाजार व भीड़-भाड़ वाली सड़कें :- अधिकांश शहरों में चमक-दमक वाले बाजार थे तथा विविध प्रकार की सामग्री से भरे हुए थे। अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें थीं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

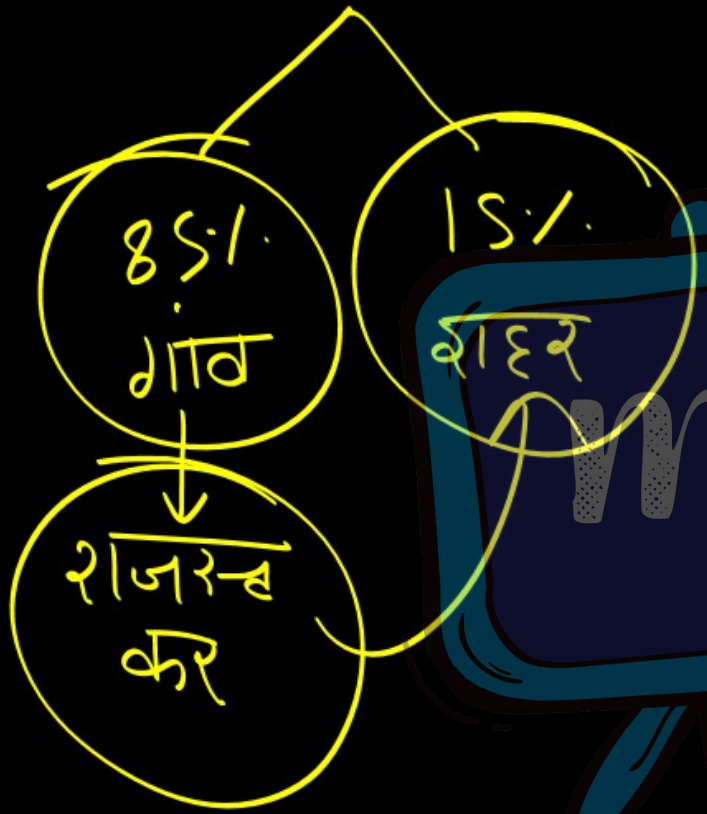


3. **बड़े-बड़े शहर :-** इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली एक बहुत बड़ा शहर था, जिसकी आबादी बहुत अधिक थी। दौलताबाद भी कम नहीं था। वह आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।

4. **बाजारों का सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होना :-** बाजार केवल क्रय-विक्रय के स्थान ही नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मंदिर व मस्जिद होती थी। कुछ बाजारों में नर्तकी, संगीतकारों व गायकों के प्रदर्शन हेतु सार्वजनिक स्थान भी उपलब्ध था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

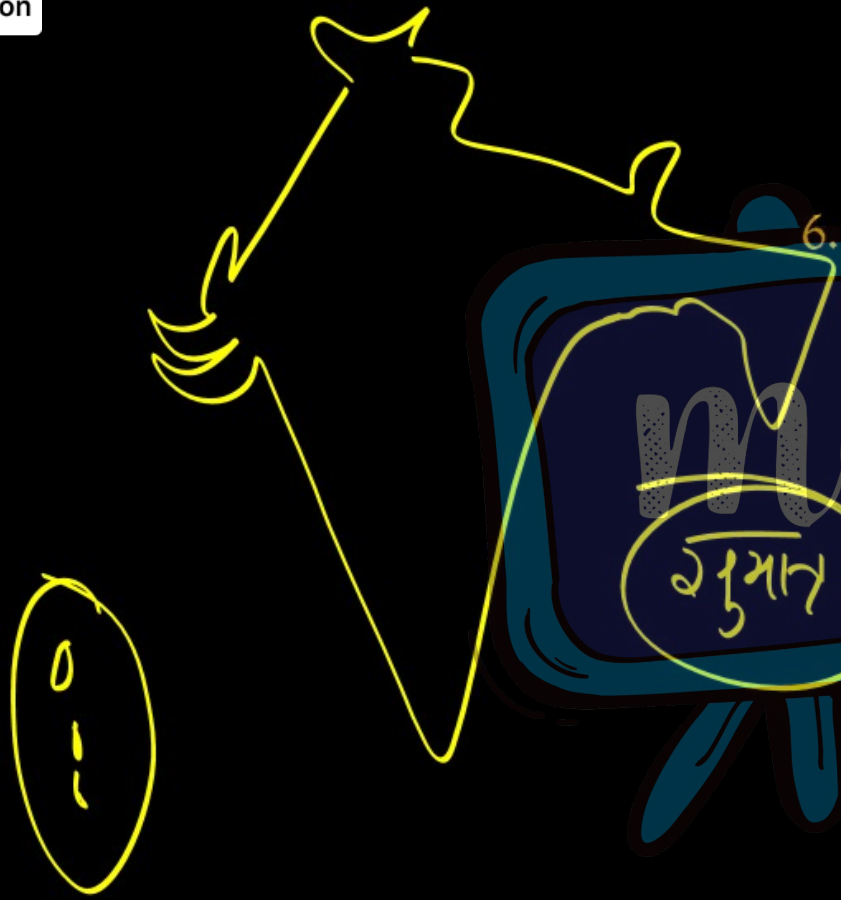
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



5. इतिहासकारों द्वारा इब्न-बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग :- इतिहासकारों ने इब्न बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग नगरों की समृद्धि का वर्णन करने में किया है। इतिहासकार यह तर्क देते हैं कि नगरों की समृद्धि व सम्पत्ति का एक बड़ा भाग गाँवों के अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



6. भारतीय उपमहाद्वीप का व्यापार व वाणिज्य के अन्तर एशियाई तन्त्रों से जुड़ा होना :- इब्न बतूता के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप व्यापार व वाणिज्य के एशियाई तंत्रों से भली भाँति जुड़ा हुआ था। भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में बहुत अधिक माँग थी जिससे व्यापारियों व शिल्पकारों को बहुत अधिक आर्थिक लाभ होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

100% सही

प्रश्न 8. चर्चा कीजिए कि बर्नियर का वृत्तान्त किस सीमा तक इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में सक्षम करता है ?

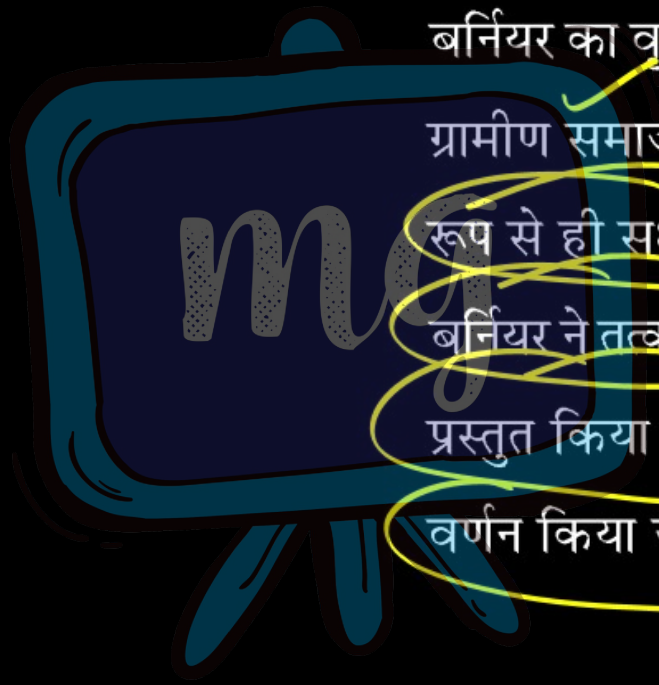
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : फ्रांस्वा बर्नियर ने समकालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त लिखा है वह सर्वथा सत्य नहीं है उसके अनुसार भारत तथा यूरोप के मध्य मूल असमानताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का सर्वदा अभाव था। बर्नियर का निजी भू-स्वामित्व में अत्यधिक विश्वास था तथा उसने भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य तथा उसके निवासियों, दोनों के लिए हानिकारक बताया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

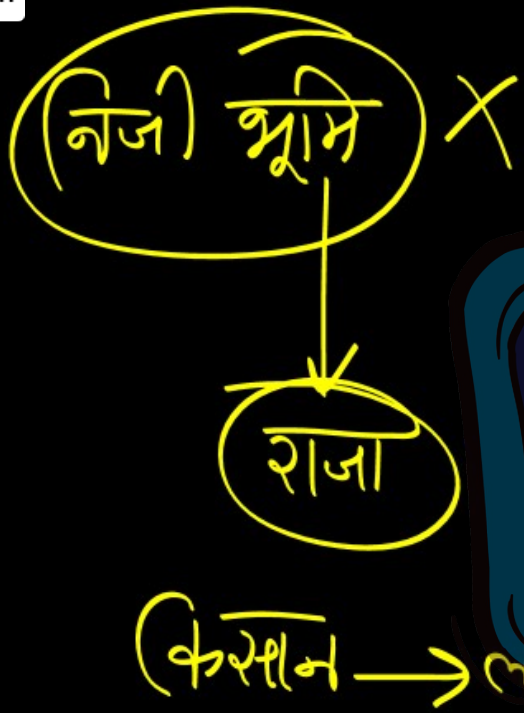
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



बर्नियर का वृत्तान्त इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुननिर्मित करने में आंशिक रूप से ही सक्षम करता है, पूर्णरूप से नहीं। बर्नियर ने तत्कालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त प्रस्तुत किया है, निम्न बिन्दुओं के द्वारा उसका वर्णन किया जा रहा है :-

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. **भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव :-** बर्नियर के अनुसार भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था। उसके अनुसार संपूर्ण भूमि का स्वामी मुगल सम्राट को माना जाता था। सम्राट इस भूमि को अपने अमीरों में बांट देता था। इस व्यवस्था से समाज व अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

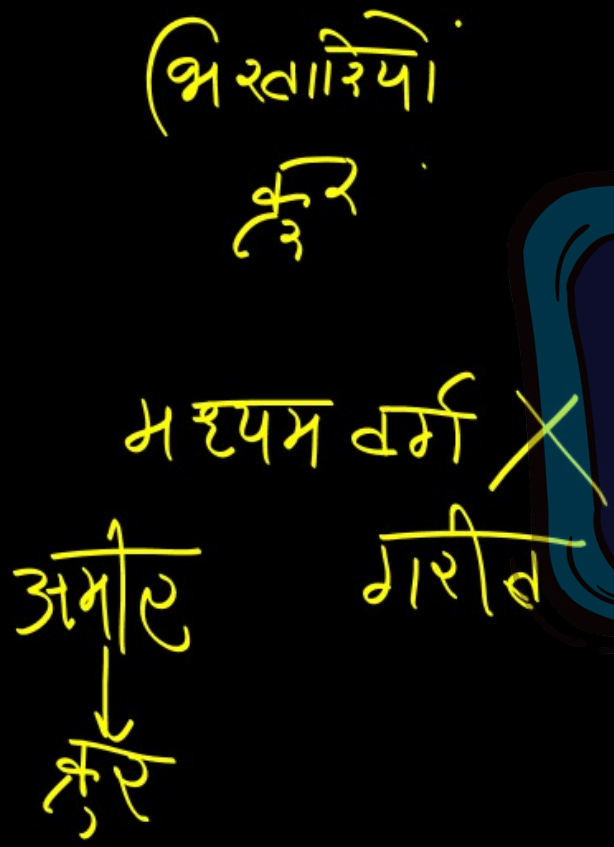
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. **भू-धारकों पर प्रतिकूल प्रभाव :-** बर्नियर के अनुसार भूमि पर राजकीय स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे। निजी भू-स्वामित्व के अभाव में बेहतर भूधारकों के वर्ग का उदय नहीं हो पाया, जो भूमि के सुधार व अच्छे रख-रखाव का प्रयास करता। इस कारण कृषि का विनाश, किसानों का उत्पीड़न और समाज के सभी वर्गों के स्तर में पतन हुआ। केवल शासक वर्ग ही ऐसा था जिस पर इस व्यवस्था का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



3. भारतीय समाज को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानना :- बर्नियर भारतीय समाज के लोगों को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानता था। यह समाज अमीरों व शक्तिशाली शासक वर्ग के अधीन था। उसके अनुसार "भारत में मध्य की स्थिति के लोग नहीं हैं।" अर्थात या तो अमीर लोग है या दरिद्र लोग।